मंच पर

सूत्रधार 1	– बाबुलाल देवड़ा
सूत्रधार 2	– सुधीर सांखला
हिडिम्बा	– विष्णु चंदेल
घटोत्कच	– राजेन्द्र चावड़ा
ब्राह्मण	– टीकाराम भाटी
ब्राह्मणी	– दीक्षीता दास
पुत्र 1	– निरमन कुमार दास
मध्यम	– सोनू बोड़ाना
पुत्र 3	– इरशाद खान
भीम	– सुधीर साँखला

मंच पार्श्व

हारमोनियम	– मांगीलाल वैष्णव
ढोलक	– पप्पू चौहान
टेक	– हफीज़ खान
वस्त्र सज्जा एवं रूपसज्जा	– समुह (अकुंर मंच)
मंच प्रबन्ध	– इरशाद खान
प्रकाश संयोजन	– कय्युम कुरेशी
सहयोग	– मृणाल बोरा, माणीक राय, माधवेन्द्र पांण्डे

आभार–
श्री दिनेश खन्ना (निदेशक - रानावि), कुलपति (नेहू) शिलांग,मेघालय
तरूण साईक्या- फर्कांटींग कॉलेज , नीलूफर ए मेहताबी- एमेच्योर थियेटर सोसायटी - गोलाघाट
मोइनुल हक़ - माईम एकेडमी , हिदायतपुर, गुवाहाटी

नाटककार – महाकवि भास
परिकल्पना एवं निर्देशन – हफीज़ खान

सम्पर्क अकुंर रंगमंच समिति, विशाल स्टील, 64, फव्वारा चौक, उज्जैन (म.प्र.) मो. 98685-11508

आज़ादी का अमृत महोत्सव

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सहयोग से

(रंगविस्तार योजना के तहत)

दिनांक 09.03.22 से 14.03.2022 तक पूर्वोत्तर राज्यों में

अंकुर रंगमंच समिति, उज्जैन (म.प्र.) की प्रस्तुति

लोक शैली तुर्रा कलंगी पर आधारित महाकवि मास रचित

मध्यम व्यायोग

रूपांतरण एवं निर्देशन – हफीज़ खान

प्रस्तुति विवरण

दिनांक 09.03.22 माईम एकेडमी - हिदायतपुर, गुवाहाटी
दिनांक 10.03.2022 रंगालय स्टूडियो थियेटर -पुरानीगुडम,नगाव
दिनांक 11.03.2022 फर्कांटिंग कॉलेज आडिटोरियम - फर्कांटिंग
दिनांक 12.03.2022 एमेच्योर थियेटर सोसायटी - गोलाघाट
दिनांक 14.03.2022 ओल्ड गेस्ट हाउस ऑडिटोरियम नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग, मेघालय

सम्पर्क अकुंर रंगमंच समिति, विशाल स्टील, 64, फव्वारा चौक, उज्जैन (म.प्र.) मो. 98685-11508

निर्देशक –

हफीज ख़ान ने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से सन् 1981 में स्नातक किया। वो रंगमंच में लगातार सक्रिय रहे हैं, विशेषकर बाल रंगमंच के क्षेत्र में। रानावि की संस्कार रंग टोली के वे संस्थापक सदस्य हैं । रानावि द्वारा देश भर में आयोजित अनेक कार्यशालाओं में बतौर प्रशिक्षक काम कर चुके है । उज्जैन में जन्मे हफीज का रूझान सदैव वहाँ की लोक–कलाओं की ओर रहा । मौजूदा प्रस्तुति एक कार्यशाला का ही परिणाम है।

निर्देशकीय –

तुर्राकलँगी कार्यशाला मैंने दिसम्बर 2014 में घोसुंडा, ग्राम चित्तौड़ में की थी। करीब 20 कलाकारों एवं कलँगी के उस्ताद मिर्ज़ा अकबर बेग कागजी व तुर्रा के उस्ताद नारायण जी जोशी और कुछ युवाओं के साथ कार्यशाला आरम्भ हुई। इसमें तुर्राकलँगी के कलाकार भी शामिल थे। मैं अपने आप को लगभग 300 वर्ष पूर्व इतिहास के ऐसे इंद्रलोक में महसूस करने लगा जहाँ तुर्राकलँगी ख्याल का और ख्याल माच का रूप धारण कर रहे थे। संगीत की बारीकियों और राग–रागनियों को अपवाद स्वरूप छोड़ दें तो लय, ताल, अभिनय शैली, गायकी, किस्सा, कथा कहानियाँ जो हमें माच में मिलती हैं वहीं इस सब में था। प्रस्तुति के लिए संस्कृत के महान नाटककार महाकवि भास के संस्कृत नाटक 'मध्यम व्यायोग' का चयन किया गया। इस प्रस्तुति को हम तुर्राकलँगी ख्याल और माच का एक गुलदस्ता कह सकते है। उज्जैन के माच कलाकारों के साथ प्रस्तुति आपके सामने है।

तुर्रा कलंगी -लोक नाट्य शैली

माच मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र की लोक नाटक शैली है, जिसकी शुरूआत उज्जैन में भागसीपुरा के गुरू गोपाल जी ने की थी। तुर्राकलँगी इस संगीतमय संवाद शैली की शुरूआत तुख़नगीर और शाह अली नाम के दो फ़कीर संतों ने की थी। तुख़नगीर एक गोसाई संत थे, भगवा कपड़े पहनते थे और शिव की आराधना करते थे। शाह अली एक मुस्लमान फकीर थे, हरे रंग के वस्त्र धारण करते थे और शक्ति की पूजा करते थे। इन दोनों की लोक–कलाओं में काफी समानता है।

नाटक सार –

पाँडवों के अज्ञातवास के दौरान अपने तीन पुत्रों के साथ वन क्षेत्र से गुजरते एक ब्राह्मण परिवार का सामना वन में ही अपनी माँ के लिए भोजन की तलाश कर रहे घटोत्कच से होता है जो उनमें से एक को अपनी माँ के भोजन के लिए ले जाने को दृढ़संकल्पित है। बड़े पुत्र पर पिता और छोटे पुत्र पर माँ के अत्यधिक स्नेह के कारण बीच का पुत्र स्वंय को हिडिम्बा के भोजन के लिये प्रस्तुत करता है। जल लाने की अनुमति लेकर वह पास के सरोवर की ओर जाता है। उसके लौटने में विलम्ब होने के कारण घटोत्कच मध्यमा–मध्यमा पुकारता है। पाँडवों के मध्यम (बीच के) भाई भीम उसी वन में थे और ये पुकार सुनकर उसके पास आते हैं । सारा वृतान्त ज्ञात होने पर वह स्वयं को हिडिम्बा के भोजन के लिए प्रस्तुत करते हैं । लेकिन इसके लिए घटोत्कच को युद्ध में उन्हें हराना होगा। घटोत्कच मल्लयुद्ध में भीम को पराजित करता है और हिडिम्बा के सामने उन्हें प्रस्तुत करता है, जहाँ उसे पता चलता है कि भीम उसके पिता है।

नाटककार –

भास (5वीं शताब्दी ई.पू.) एक भारतीय नाटककार थे जो संस्कृत में लिखते थे। उनके कार्य खो चुके थे, जब तक की 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में पाण्डुलिपियाँ फिर से नहीं मिल गई। उनके कुछ उपलब्ध नाटक है – स्वप्नवासवदत्ता, प्रतिभा–नाटक, पंच–रात्र, मध्यम व्यायोग, दूत घटोत्कच, उरूभंगम, कर्णभारम्, हरिवंश, अभिषेक नाटक आदि।

अंकुर रंगमंच समिति के बारे में –

अंकुर रंगमंच समिति उज्जैन ने विगत 4 दशकों से रंगमंच, शैक्षिक रंगमच, बाल रंगमंच, लोकनाट्य, साहित्य एवं कला माध्यमों को लेकर शिक्षा, साक्षरता, स्वास्थ्य, जन विज्ञान और सामाजिक न्याय–संदर्भ के नाट्य महोत्सवों, नाट्य शिविरों, कार्यशालाओं एवं नाट्य प्रस्तुतियों का आयोजन किया है। अंकुर मंच ने संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, संगीत नाटक अकादमी, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली, मध्यप्रदेश कला परिषद्, मध्यप्रदेश संग्रहालय, कालिदास अकादमी, उज्जैन के अलावा कई स्थानीय संस्थाओं के साथ मिलकर रंग–शिविरों और नाट्य समारोहों का आयोजन एवं उनमें भागीदारी की है। मालवा माच के लोक व्यापीकरण हेतु मालवा माच 1999, 2005, 2007, 2016, 2017, 2018 एवं 2019 के आयोजन विशेष रूप से चर्चित रहे है।